नवोन्मेष
रुक्टा (राष्ट्रीय)

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

(अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से संबद्ध)

website: www.ructarashtriya.org **Email:** info@ructarashtriya.org

केन्द्रीय कार्यालय	:	देराश्री शिक्षक सदन, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004
प्रधान कार्यालय	:	सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305001 (राज.)
अध्यक्ष	:	डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर मो. 9414452369, 9983007575
महामंत्री	:	डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर मो. 9414497042

परिपत्र क्रं. : रुक्टा (रा.)/2016-17/03 पौष शु. ०१ वि. स. २०७३ तदनुसार 30 दिसम्बर, 2016
(सभी इकाई सचिवों एवं सक्रिय सदस्यों को समस्त सदस्यों में प्रसारित करने के अनुरोध सहित प्रेषित)

प्रिय महोदय/महोदया,

सादर नमस्कार।

55वें प्रांतीय अधिवेशन के आयोजन की सूचना, पदनाम परिवर्तन को लेकर ऐतिहासिक प्रदर्शन, उच्च शिक्षा मंत्रीजी से भेंट, विभागशः सम्पन्न प्रांतीय/राष्ट्रीय संगोष्ठियों की जानकारी एवं संगठन की अन्य गतिविधियों के विवरण सहित यह परिपत्र प्रस्तुत है।

55 वाँ प्रांतीय अधिवेशन 11-12 जनवरी को जयपुर में आयोज्य

संगठन का 55वाँ प्रदेश अधिवेशन पौष शु. १४ व पूर्णिमा विक्रम संवत् २०७३ तद्नुसार दिनांक 11 व 12 जनवरी 2017 को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के दीक्षांत केन्द्र (convocation centre) में आयोजित किया जाएगा। 11 जनवरी 2017 को प्रातः 11 बजे से अधिवेशन प्रारम्भ होगा। प्रथम दिन उद्घाटन समारोह, देराश्री व्याख्यान एवं खुला सत्र आयोजित किए जाएँगें। 12 जनवरी 2017 को प्रातः 9 बजे शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा जिसका विषय ***''शिक्षा में जवाबदेही एवं पारदर्शिता''*** है। शिक्षक साथियों से आग्रह है कि संगोष्ठी हेतु अपना शोध पत्र info@ructarashtriya.org पर भिजवाएँ। शैक्षिक संगोष्ठी के पश्चात् समारोप कार्यक्रम सम्पन्न होगा। अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, राजनैतिक व्यक्तित्वों, शिक्षाविदों तथा अखिल भारतीय अधिकारियों का सान्निध्य प्राप्त होगा। सभी शिक्षक साथियों से विनम्र अनुरोध है कि अधिवेशन में पूरे समय रुक कर सक्रिय सहभागिता करें। अधिवेशन में पंजीयन शुल्क 200 रु. प्रति संभागी है। सभी इकाई सचिवों से आग्रह है कि स्थानीय इकाई की बैठक अविलम्ब आयोजित कर समस्याओं से संबंधित प्रस्ताव पारित करवा कर ई-मेल से भिजवाएँ।

शिक्षक समस्याओं के संबंध में संगठन की गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

1. **पदनाम परिवर्तन को लेकर अभूतपूर्व प्रदर्शन** - 7 नवम्बर 2016 को संगठन के आह्वान पर सम्पूर्ण प्रदेश से उच्च शिक्षा में कार्यरत 4000 से अधिक शिक्षकों ने पदनाम परिवर्तन की मांग को लेकर मुख्यमंत्री निवास पर विशाल प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिला शिक्षकों की सहभागिता रही। विधानसभा के सामने ज्योति नगर टी पाइंट से अनुशासनबद्ध कतारों में शिक्षकों ने माँगों के समर्थन में प्लेकार्ड्स एवं अपनी संगठन इकाईयों के बैनर आदि लेकर नारे लगाते हुए सिविल लाइन्स फाटक तक रैली निकाली, जहाँ रैली एक विशाल सभा में परिवर्तन हो गई। सभा को अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर, शैक्षिक मंथन पत्रिका के संपादक प्रो. संतोष पाण्डेय, संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह, संगठन महामंत्री सहित वरिष्ठ पदाधिकारियों ने संबोधित किया। वक्ताओं ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य की उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के पदनाम यू.जी.सी. रेग्यूलेशन के

अनुसार व्याख्याता के स्थान पर सहायक प्रोफेसर, सह प्रोफेसर व प्रोफेसर तथा पी.टी.आई. के स्थान पर शारीरिक शिक्षा निदेशक करने हेतु संगठन निरन्तर पत्रों, ज्ञापनों व भेंटवार्ताओं के माध्यम से प्रयासरत रहा है। संगठन द्वारा शिक्षकों की भावनाओं, तथ्यों, जमीनी वास्तविकताओं एवं अन्य राज्यों द्वारा इस संदर्भ में की गई कार्यवाही को आवश्यक दस्तावेजों सहित सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। इस सब के बावजूद लम्बे समय से इस मामले को लटकाए रखने के कारण शिक्षकों में निराशा व आक्रोश उत्पन्न हुआ है। नौकरशाही एवं राजनीति के अनिर्णय के कारण देशभर में राजस्थान के शिक्षकों को अपेक्षित सम्मान नहीं मिल पा रहा है। वक्ताओं ने कहा कि रुक्टा (रा.) का स्पष्ट मत एवं कार्यपद्धति रही है कि शिक्षकों की समस्याओं का समाधान सरकार के साथ परस्पर संवाद के माध्यम से हो किन्तु गत वर्षों में संगठन द्वारा किये गए संवाद के समस्त प्रयासों के बावजूद सरकार द्वारा पदनाम परिवर्तन की समस्या को हल नहीं करने के कारण विवश होकर अपना न्यायोचित अधिकार माँगने सड़क पर उतरना पड़ा है। संगठन की कार्यपद्धति के अनुरूप ही प्रदर्शन में किसी तरह के नकारात्मक/व्यक्तिगत नारे नहीं लगाए गए। पुलिस प्रशासन में भी उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के गरिमापूर्ण अनुशासनात्मक व्यवहार की चर्चा रही। प्रदर्शन के दौरान संगठन के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री निवास पर उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ व अन्य अधिकारियों के साथ भेंट की तथा यू.जी.सी. रेग्यूलेशन के अनुरूप पदनाम परिवर्तन की माँग की। उच्च शिक्षा मंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि सरकार इस विषय पर गंभीर है तथा शीघ्र ही मुख्यमंत्री जी इस संबंध में बैठक कर उचित निर्णय लेंगी। प्रतिनिधिमंडल में संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह, महामंत्री, संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट, संयुक्त सचिव डॉ. सरस्वती मित्तल एवं संभाग संगठन मंत्री डॉ. सुशील कुमार बिस्सु शामिल थे। महामंत्री द्वारा प्रदर्शन स्थल पर बैठक की जानकारी दी गई तथा सकारात्मक कार्यवाही नहीं होने पर भविष्य में संघर्ष तेज करने का मंतव्य प्रकट किया गया। अध्यक्ष जी ने सभी शिक्षक साथियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में इसी प्रकार का समर्थन एवं सहयोग बनाए रखने का आग्रह किया।

2. **उच्च शिक्षा मंत्रीजी से भेंट** – संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने 26 दिसम्बर, 2016 को नवनियुक्त उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी से भेंट कर उनका स्वागत किया। संगठन ने उनके यशस्वी कार्यकाल की शुभेच्छा व्यक्त करते हुए उन्हें उच्च शिक्षामंत्री का पदभार ग्रहण करने पर बधाई दी। स्वागत पश्चात् उच्च शिक्षा मंत्रीजी से हुई विस्तृत चर्चा में संगठन ने शिक्षकों की लम्बित समस्याओं के शीघ्र समाधान की माँग की। संगठन द्वारा व्याख्याताओं के पदनाम परिवर्तन हेतु आवश्यक कार्यवाही को त्वरित करने, महाविद्यालयों में व्याख्याताओं, शारीरिक-शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों और मंत्रालयिक कर्मचारियों के रिक्त पद भरने, पिछले वर्षों में बढ़ी हुई शिक्षार्थियों की संख्या के आधार पर शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों के नवीन पदों का सृजन करने, पूर्व सेवा का लाभ प्रदान करने, आर.वी.आर.ई.एस. सेवा के तहत कार्यरत शिक्षकों को समायोजन पश्चात् नियमानुसार देय कॅरियर एडवान्समेंट के लाभ प्रदान करने, निदेशक/आयुक्त के पद पर वरिष्ठ शिक्षाविद् की ही नियुक्ति, पीएच.डी. एवं एम.फिल. योग्यता हेतु प्रोत्साहन स्वरूप देय वेतन वृद्धि पुनः प्रारम्भ करने, शिक्षकों को शोध करने हेतु कोर्स-वर्क की अनिवार्यता से छूट प्रदान करने, 30 जून, 2013 के बाद ड्यू पे-बैंड-4 के लाभ शीघ्र प्रदान करने, जनवरी 2006 से जून 2006 के मध्य ड्यू वेतन वृद्धि वाले शिक्षकों को भी छठे वेतनमान में अतिरिक्त वेतनवृद्धि देने, परिवीक्षाधीन अवधि में कार्यरत शिक्षकों की परिवीक्षा अवधि को नियमित सेवा मानते हुए वेतन सहित समस्त परिलाभ प्रदान करने, आर.वी.आर.ई.एस. सेवा के तहत कार्यरत शिक्षकों को छठे वेतन आयोग की बकाया राशि का भुगतान शीघ्र करवाने एवं इन शिक्षकों के चिकित्सा अवकाश एवं उपार्जित अवकाश राज्य सेवा में अग्रनीत करने, संविदा आधार पर नियुक्त शिक्षकों को यू.जी.सी. द्वारा अनुशंसित न्यूनतम वेतन प्रदान करने, स्नातक महाविद्यालयों के पात्र शिक्षकों को शोध-निदेशक के रूप में पंजीकृत करने की व्यवस्था करने, 1994 के पश्चात् नियुक्त महाविद्यालय शिक्षकों के स्थायीकरण आदेश एवं वरिष्ठता सूची जारी करने, विभागीय पदोन्नति समिति एवं कॅरियर एडवान्समेन्ट स्कीम के तहत वरिष्ठ, चयनित एवं पे-बैंड-4 के परिलाभों हेतु वर्ष में दो बार नियमित बैठकें आयोजित करने सहित सभी लम्बित समस्याओं पर उच्च शिक्षा मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित किया। उच्च शिक्षा मंत्रीजी ने आश्वस्त किया कि वे सभी लम्बित समस्याओं की तथ्यात्मक जानकारी लेकर इन्हें शीघ्र निपटाने का प्रयास करेंगी।

3. **पदनाम परिवर्तन हेतु वित्त सचिव एवं आयुक्त कॉलेज शिक्षा के साथ बैठक** – संगठन द्वारा 7 नवम्बर 2016 को पदनाम परिवर्तन के लिए जयपुर में किए अभूतपूर्व प्रदर्शन के पश्चात् मुख्यमंत्री जी के निर्देशानुसार 21 नवम्बर 2016 को वित्त सचिव श्री प्रेमसिंह मेहरा एवं आयुक्त कॉलेज शिक्षा श्री आशुतोष ए.टी. पेडणेकर के साथ संगठन के प्रतिनिधि मंडल की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संगठन द्वारा पदनाम से जुड़े विभिन्न तथ्यों एवं देश के अन्य राज्यों के आदेशों के साथ अपना पक्ष रखा गया। पदनाम से संबंधित विभिन्न शंकाओं पर प्रश्नों का दस्तावेजों सहित तथ्यात्मक उत्तर देकर संतुष्ट किया। आशा है कि प्रदर्शन एवं बैठक के सकारात्मक परिणाम शीघ्र आयेंगे। प्रतिनिधि मंडल में संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह, महामंत्री, संगठन मंत्री, डॉ. ग्यारसीलाल जाट, संभाग संगठन मंत्री डॉ. सुशील बिस्सु प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. कमल मिश्रा शामिल थे।

4. **मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर जी से भेंट:**– अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के एक प्रतिनिधि मण्डल ने 23 दिसम्बर 2016 को उच्च शिक्षा संवर्ग की समस्याओं को लेकर केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर जी से विस्तृत भेंटवार्त्ता की। प्रतिनिधि मंडल ने छठे वेतनमान आयोग की विसंगतियों को सबसे पहले दूर करने की माँग की, इन विसंगतियों में एपीआई-पीबीएएस को खत्म करने तथा पुराने सभी मामलों में इस स्कीम से छूट दिए जाने तथा सभी प्रकार की वैतनिक विसंगतियाँ दूर करने की मांग की। मानव संसाधन विकास मंत्रीजी ने आश्वासन दिया है कि सभी विसंगतियाँ यू.जी.सी. के साथ बातचीत करके दूर की जाएँगी। संगठन द्वारा मांग की गई है कि सातवें वेतन आयोग द्वारा जो वेतनमान दिए जाएँ, वह सेवा शर्तों से जोड़े नहीं जाने चाहिए। प्रमोशन टाइम बाउंड रहना चाहिए। एक सही प्रमोशन नीति की स्थापना करनी चाहिए। इस विषय में मंत्री महोदय ने प्रतिनिधिमंडल से वैकल्पिक प्रमोशन स्कीम का प्रारूप माँगा है। प्रतिनिधिमंडल ने सातवें वेतन आयोग में शिक्षकों को दिए जाने वाले वेतनमान अन्य सरकारी कर्मचारियों की तुलना में एक सीढ़ी ऊपर देने एवं शिक्षकों का वेतनमान पुरानी स्कीम के अकादमिक ग्रेड पे 7000/- के बराबर फिक्स करने, शिक्षकों को कम से कम चार प्रमोशन देने, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ, रिहायशी सुविधाएँ, अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए सस्ते लोन की सुविधा, ग्रैच्यूटी में वृद्धि, इन्कम टैक्स में छूट आदि देने तथा वेतन के एरियर एकमुश्त दिये जाने की माँग की। भेंट वार्ता में संगठन ने विश्वविद्यालय के स्तर पर रिसर्च और इनोवेशन क्लस्टरों की स्थापना, यू.जी.सी. द्वारा राज्य सरकारों के शिक्षा विभागों को स्टेट हायर एजुकेशन कॉउन्सिल बनाये जाने का निर्देश देने, शिक्षकों के लिए ग्रीवांस रेड्रेसल यूनिट विश्वविद्यालय और कॉलेज स्तर पर बनाने का भी आग्रह किया। प्रतिनिधि मंडल में राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर, डॉ. निर्मला यादव, श्री महेन्द्र कुमार, प्रो. प्रग्नेश शाह, डॉ. मनोज सिन्हा और डॉ. अनुराग मिश्रा शामिल थे।

5. **आयुक्त कॉलेज शिक्षा से भेंट** – 7 नवम्बर 2016 को संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने नव नियुक्त आयुक्त कॉलेज शिक्षा श्री आशुतोष ए.टी. पेडणेकर से भेंट कर उनका स्वागत किया। संगठन ने कामना की है कि उनके कार्यकाल में कॉलेज शिक्षा का सर्वांगीण विकास होगा तथा शिक्षा व शिक्षकों की आयुक्तालय स्तर लंबित समस्याओं का शीघ्र समाधान होगा।

6. **जनवरी 2006 से जून 2006 के मध्य ड्यू वेतनवृद्धि वाले शिक्षकों को एक अतिरिक्त वेतनवृद्धि देने के संबंध में कार्यवाही** – संगठन अन्य राज्य कर्मचारियों के समान ही जिन व्याख्याताओं, पुस्तकालाध्यक्षों एवं शारीरिक शिक्षकों की वेतनवृद्धि तिथि पाँचवें वेतन आयोग में 2 जनवरी 2006 से 30 जून 2006 के मध्य आती है उन्हें छठे वेतनमान में एक अतिरिक्त वेतनवृद्धि देने की माँग करता आया है। संगठन के लगातार प्रयासों से इस संदर्भ में फाईल पर कार्यवाही प्रारम्भ हो चुकी है। किन्तु अभी भी कुछ महाविद्यालयों से अपेक्षित सूचना प्राप्त नहीं होने के कारण 9 दिसम्बर को आयुक्तालय द्वारा पुन: महाविद्यालयों से इस संदर्भ में ब्यौरा माँगा गया है।

7. **आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं पर पूर्व बकाया माँगने पर कार्यवाही की चेतावनी का विरोध** – आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने गत 14 दिसम्बर को पत्र जारी कर आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं द्वारा समायोजन से पूर्व सेवा अवधि के बकाया हेतु राज्य सरकार को पक्षकार बनाकर माननीय न्यायालय/अधिकरण में याचिका/प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने को आर.वी.आर.ई.एस. कार्मिकों द्वारा राज्य सेवा में समायोजन हेतु दी गई वचनबद्धता का उल्लंघन मानते हुए कार्यवाही की चेतावनी दी है। संगठन ने उक्त चेतावनी पत्र पर त्वरित विरोध दर्ज करवाते हुए उच्च शिक्षा मंत्रीजी से उक्त पत्र को वापिस लेने एवं आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं के अनुदानित सेवा अवधि के बकाया वेतनमान, एरियर, उपादान आदि भुगतान के लिए संबंधित प्रबन्ध समितियों को बाध्य करने की माँग की है।

8, **संविदा शिक्षकों एवं रिक्त पदों पर नियुक्त सेवानिवृत्त व्याख्याताओं के मानदेय भुगतान की कार्यवाही** - संगठन महाविद्यालय में नियुक्त संविदा व्याख्याताओं एवं रिक्त पदों पर नियुक्त सेवानिवृत्त व्याख्याताओं के मानदेय को प्रतिमाह भुगतान करने के लिए लगातार मांग करता आया है। संगठन के प्रयासों से राज्य के महाविद्यालयों में नियुक्त संविदा शिक्षकों के मानदेय भुगतान के आदेश जारी हुए हैं, साथ ही सेवानिवृत्त व्याख्याताओं के बकाया भुगतान के लिए भी आयुक्तालय ने विभिन्न महाविद्यालयों से जानकारी मांग ली है। शीघ्र ही सेवानिवृत्त व्याख्याताओं द्वारा दी गई सेवाओं के लिए भुगतान प्रक्रिया पूर्ण होने की संभावना है। संगठन ने संविदा व्याख्याताओं के मानदेय दरों में परिवर्तन की माँग भी सरकार से की है।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

1. **शिक्षा के समुन्नयन से सम्बन्धित विषयों पर प्रान्तीय/राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ सम्पन्न** - राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) एवं शैक्षिक मंथन संस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षा के समुन्नयन से सम्बन्धित विषयों पर जोधपुर, कोटा, उदयपुर, अलवर, जयपुर, अजमेर एवं भरतपुर में प्रदेश/राष्ट्र स्तरीय संगोष्ठियाँ सम्पन्न हुईं। इसके अलावा कोटा एवं अलवर इकाईयों द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर परिचर्चाएं आयोजित की गई, साथ ही अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ एवं म.द.स. विश्वविद्यालय अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में उच्च शिक्षा में परीक्षा सुधार पर राष्ट्रीय संगोष्ठी भी सम्पन्न हुई।

   जोधपुर में सम्पन्न ***"वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत में उच्च शिक्षा का पुनरुत्थान"*** विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि महर्षि दयानंद सरस्वती वि.वि. अजमेर के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी ने कहा कि उच्च शिक्षा में संख्यात्मक वृद्धि के साथ-साथ गुणात्मक वृद्धि भी हो रही है, यही कारण है कि पूरे विश्व की बड़ी-बड़ी संस्थाओं/उपक्रमों में भारतीय विद्यार्थी कार्यरत हैं, नेतृत्व कर रहे हैं। राष्ट्र में परिवर्तन हो रहा है, किन्तु मूल आवश्यकता राष्ट्रीयता की है सभी शिक्षकों को इसके लिए प्रयास करने चाहिए। वर्तमान हालात पर ध्यान केन्द्रित करवाते हुए राष्ट्रीयता के संदर्भ में उन्होंने चीन व पाक निर्मित उत्पादों के बहिष्कार का आह्वान भी किया। संगोष्ठी में संबोधित करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष जय नारायण व्यास वि.वि. जोधपुर के कुलपति प्रो. आर.पी. सिंह ने कहा कि पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए, मानवीय धर्म व समाज के लिए इसकी अत्यधिक आवश्यकता है। संगठन की इस गतिविधि की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि *आज तक संगठनों को वेतन व अधिकारों के लिए हड़ताल करते देखा है, यह पहला संगठन है जो विचार-विमर्श व संगोष्ठी करता है समाज व राष्ट्र का चिंतन करता है।* कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित केयर्न इण्डिया के उप महाप्रबंधक श्री अयोध्या प्रसाद गौड़ ने पुरातन शिक्षा के जिज्ञासा, अन्वेषण, अनुसंधान प्रणाली पर ध्यान दिलाते हुए भारतीय संस्कृति के मूल में विचार व अध्ययन करने का विमर्श दिया। संगोष्ठी में तीन तकनीकी सत्र हुए जिसमें 65 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। प्रथम सत्र में डॉ. सतीश शर्मा, दूसरे सत्र में प्रो. चन्द्रशेखर एवं तीसरे सत्र में प्रो. अजय गुप्ता के सान्निध्य में शोध पत्र पढ़े गए। इन सत्रों में पाठ्यक्रम परिवर्तन, कौशल विकास व मूल्यांकन पद्धति पर गहन चिन्तन हुआ।

   समारोप सत्र में प्रो. पी.एम. जोशी, प्रो. अखिल गर्ग एवं संभाग संगठन मंत्री डॉ. सुशील बिस्सु अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रो. जोशी जी ने गुणवत्ता एवं प्रो. गर्ग ने भौगोलिक व क्षेत्रीय आधार पर पाठ्यक्रम की रचना का सुझाव दिया। डॉ. बिस्सू ने बताया कि संस्कार, नैतिकता व राष्ट्रीयता व्यवहार का विषय है जो छात्र देख कर सीखता है, इसलिए शिक्षक को ही उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ेगा। संगोष्ठी के आरंभ में संयोजक डॉ. भंवरसिंह राठौड़ ने स्वागत किया, निदेशक डॉ. नागौरी ने संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन किया एवं आयोजन सचिव डॉ. ओम प्रकाश देवासी ने अतिथियों का परिचय व स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. चयन मेहता ने किया।

   राजकीय महाविद्यालय, **कोटा** में ***''नैतिक मूल्य एवं उच्च शिक्षा में गुणवत्ता''*** विषय पर आयोजित प्रदेश स्तरीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में मुख्य वक्ता संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह ने कहा कि एक ओर सरकार उच्च शिक्षा संस्थाओं को विश्वस्तरीय बनाने की कोशिश में जुटी है, वहीं दूसरी ओर छात्रों के पाठ्यक्रम और परीक्षाओं को लेकर शिक्षकों से शोध कार्य करवाने तक का फैसला राजधानी में बैठे अफसरों के हाथों में सौंपा जा रहा है। शिक्षा जगत की बदहाली रोकनी है तो अध्ययन अध्यापन से जुड़े फैसले शिक्षकों के हाथों में सौंपने होंगें और शिक्षकों को

शिक्षा व्यवस्था को चौपट करने की सरकारी कोशिशों का विरोध करना होगा, तभी तक्षशिला और नालंदा जैसी कीर्ति दुबारा होगी। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌बोधन देते हुए कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी. के. दशोरा ने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना है तो शिक्षा के बजट को बढ़ाया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा शिक्षक को एक रोल मॉडल बनने की जरूरत है। उसे प्रमाणिक होना चाहिए। विभाग अध्यक्ष डॉ. विजय पंचोली ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया जबकि विभाग सचिव डॉ. गीताराम शर्मा ने संगोष्ठी की रुपरेखा प्रस्तुत की। उद्‌घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य राजमल कोचिटा ने की एवं धन्यवाद इकाई सचिव डॉ. आदित्य गुप्ता ने दिया। तकनीकी सत्र में 30 शोध पत्र पढ़े गए। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता कोटा खुला विश्वविद्यालय के प्रो. पी.के. शर्मा ने की। समारोप सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. एम.एल. साहु ने उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए शिक्षा को जीवन निर्माण का अभिन्न अंग बताया। समारोप सत्र की अध्यक्षता प्रो. बी.एल. शर्मा ने की। संगोष्ठी में कोटा व बारां विभाग के 200 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों का संचालन डॉ. प्रहलाद दुबे, डॉ. बी.बी. जैमिनी एवं डॉ. रामावतार मेघवाल ने किया।

मीरा कन्या महाविद्यालय, **उदयपुर** में **''शिक्षा में गुणवत्ता''** विषय पर एक दिवसीय प्रांतीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। उद्‌घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि ज्ञान का विस्फोट तो हो गया है लेकिन जीवन जीने की कला पीछे छूट गई है, इसलिए हमें नए सिरे से मंथन की जरूरत पड़ रही है। शिक्षा को व्यावसायिक मानसिकता से मुक्त करने की जरूरत है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने कहा कि राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक एवं शिक्षक के हित में समाज खड़ा होगा तभी हम समानांतर भाव से आगे बढ़ेंगे। प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. रेखा भट्‌ट ने संगोष्ठी की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी में प्रांत के 210 महाविद्यालय शिक्षक उपस्थित रहे एवं 50 शोध पत्रों का वाचन किया गया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि म.द.स. विश्वविद्यालय अजमेर के प्रो. बी.पी. सारस्वत रहे और अध्यक्षता राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. चौधरी ने की। प्राचार्य डॉ. रामेश्वर आमेटा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. अशोक सोनी, डॉ. सुदर्शन राठौड़, डॉ. भवशेखर, डॉ. के.एल. मीणा, डॉ. बालुदान बारहठ, डॉ. श्रुति टंडन एवं डॉ. ज्योति गौतम ने विभिन्न सत्रों का संचालन किया।

राजर्षि महाविद्यालय, **अलवर** में **''शिक्षा में अनुशासन''** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.पी. सिंघल ने कहा कि अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण बदलने की जरूरत है। छात्र एवं अध्यापक के मध्य संवाद की कमी के कारण अनुशासनहीनता के मामले बढ़ते हैं। अनुशासन को व्यक्तिगत व्यवहार के माध्यम से समाज में रोपा जा सकता है किन्तु इसे थोपा नहीं जा सकता। मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. मनोज सिन्हा ने कहा कि शिक्षा और अनुशासन एक दूसरे के पूरक है। शिक्षा और अनुशासन मिलकर ही सामाजिक मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाते हैं। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. अनूप श्रीवास्तव ने कहा कि ज्ञान जड़त्व नहीं चेतनता है, यह व्यक्तित्व को निरन्तर आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। इससे पहले प्रदेश संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर व आयोजन सचिव डॉ. कर्मवीर सिंह ने कार्यक्रम का परिचय देते हुए स्वागत किया। सेमिनार के द्वितीय सत्र एवं तृतीय सत्र में शोध पत्रों का वाचन किया गया। द्वितीय सत्र में अध्यक्ष डॉ. कुमकुम कपूर एवं सहअध्यक्ष डॉ. दीपचन्द गुप्ता तथा तृतीय सत्र में अध्यक्ष डॉ. नाथूलाल शर्मा एवं सहअध्यक्ष डॉ. पूरण सिंह चौधरी रहे। समापन समारोह के मुख्य अतिथि संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट थे व अध्यक्षता डॉ. घनश्याम लाल ने की। इस दौरान प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. रचना आसोपा, विभाग महिला प्रतिनिधि डॉ. ऋतु गुप्ता, विभाग सहसचिव डॉ. अजय कुमार वर्मा, प्रचार प्रकोष्ठ संयोजक डॉ. शशिकांत गुप्ता उपस्थित रहे।

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति'' विषय पर **जयपुर** में आयोजित प्रांतीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में मुख्य अतिथि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी, मुख्य वक्ता संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा डॉ. नाथूलाल सुमन रहे जबकि अध्यक्षता संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह ने की। प्रो. सोडानी ने उच्च शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि पाठ्यक्रम निर्माण व परिवर्तन की हमें पूर्ण स्वतंत्रता है। गुणवत्ता की दृष्टि से भारत में उत्कृष्ट शिक्षण संस्थाएँ विद्यमान हैं किन्तु राज्य में उच्च शिक्षण संस्थाएँ वित्त के अभाव में अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पा रही हैं। अध्यापकों की कमी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है।

उन्होंने कहा कि शिक्षक को समाज का नेतृत्व करते हुए विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता का निर्माण करना होगा। डॉ. नाथूलाल सुमन ने कहा कि शिक्षा का आधुनिकीकरण निरन्तर प्रक्रिया है इसी आधार पर भारतीय छात्रों के विदेश में अध्ययन हेतु स्वीकार्यता बढ़ेगी तथा विदेशी छात्र भारत में अध्ययन हेतु प्रेरित होंगें। अध्यक्षता करते हुए डॉ. दिग्विजयसिंह ने कहा कि प्राच्य शिक्षा की तुलना में वर्तमान शिक्षा का ह्रास चिंताजनक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा के परिदृश्य को बदलने में सक्षम होगी। तकनीकी सत्रों में संभागी शिक्षकों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस अवसर पर अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड के सदस्य डॉ. नंद सिंह नरुका, शैक्षिक प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. राजेन्द्र शर्मा एवं प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ. सरस्वती मित्तल मंचस्थ रहे। समारोप सत्र में मुख्य अतिथि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के पूर्व अध्यक्ष डॉ. भरतराम कुम्हार ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत में शिक्षा है लेकिन शिक्षा में भारत नहीं है। उन्होंने नई शिक्षा नीति में शिक्षा के दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष को प्रबल बनाने की आवश्यकता व्यक्त की। अध्यक्षता करते हुए संगठन उपाध्यक्ष डॉ. राजीव सक्सेना ने भारत केन्द्रित शिक्षा नीति बनाने पर बल दिया। अन्त में विभाग अध्यक्ष डॉ. पी.एल. गुप्ता ने सभी का आभार व्यक्त किया।

राजकीय कन्या महाविद्यालय, **अजमेर** में **''शिक्षा में स्वायत्तता''** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में मुख्य अतिथि राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. शिवसिंह राठौड़ ने कहा कि स्वतंत्रता के 70 साल पश्चात् भी अंग्रेजों की थोपी शिक्षण पद्धति जारी है। उन्होंने मौजूदा शिक्षा पद्धति को उससे संबंधित प्रशासनिक नियंत्रण से मुक्त करने की आवश्यकता जताई। संगठन महामंत्री ने कहा कि शिक्षा राष्ट्रीय हितों को पूरा करने वाली होनी चाहिए। शिक्षकों के सामूहिक प्रयास से शिक्षा अपनी उत्कृष्टता के लक्ष्य को पूरा कर सकती है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए संगठन उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने कहा कि संगठन सदैव सामाजिक उत्थान एवं शैक्षिक गुणवत्ता के लिए प्रयासरत एवं संकल्पबद्ध है। उन्होंने शिक्षा को अकादमिक, वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वायत्तता देने की महती आवश्यता जताई। उद्‌घाटन सत्र में संगठन के विभाग अध्यक्ष डॉ. पुखराज देपाल एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रेनु शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। इसके बाद आयोजित तकनीकी सत्रों में 28 शोध पत्रों का वाचन किया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर के प्राचार्य डॉ. एस. के. देव ने शैक्षिक व्यवस्था को शासन केन्द्रित होने के बजाय समाज केन्द्रित होने की जरूरत बताई। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों का संचालन डॉ. किशनाराम महिया एवं डॉ. विमलेश शर्मा ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सत्येन्द्र कुमार जैन ने किया। संगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के लगभग तीन सौ संभागियों ने भाग लिया।

महारानी श्री जया महाविद्यालय, **भरतपुर** में सम्पन्न **''व्यावसायिक मूल्य एवं मूल्य आधारित शिक्षा''** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्यवक्ता श्री योगेन्द्र जी महाराज ने कहा कि भारतीय संस्कृति के अनुरूप आदर्श जीवन मूल्यों का चिन्तन करते हुए उन्हें जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिये, इससे ही व्यावसायिक मूल्य स्थापित होंगे एवं मानव मात्र का कल्याण होगा। उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. उमेशचन्द्र शर्मा ने की। सत्र का संचालन डॉ. योगेन्द्र भानु ने किया जबकि धन्यवाद प्रो. महेन्द्र कुमार ने दिया। इसके बाद दो तकनीकी सत्रों में 25 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। इन सत्रों की अध्यक्षता प्रो. उमेश चतुर्वेदी एवं डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने की। संचालन डॉ. रजनी वशिष्ठ एवं डॉ. योगेश वशिष्ठ ने किया जबकि आभार प्रदर्शन डॉ. गिर्राज मीना एवं डॉ. नवनीत शर्मा ने किया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने संगठन के सामाजिक एवं शैक्षिक सरोकारों की चर्चा करते हुए शिक्षकों से शिक्षा के निरन्तर उत्थान में योगदान करने का आह्‌वान किया। सत्र की अध्यक्षता उपाचार्य डॉ. कृष्णा शर्मा ने की। सत्र का संचालन डॉ. योगेन्द्र भानु ने किया तथा आभार डॉ. मनोज कुमार सिनसिनवार ने व्यक्त किया। संगोष्ठी में 182 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में एम एस जे महाविद्यालय के पूर्व इकाई सचिव दिवगंत शिक्षक साथी डॉ. अनिल सक्सेना को दो मिनट मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ एवं मदस विश्वविद्यालय, **अजमेर** के संयुक्त तत्वावधान में **''उच्च शिक्षा में परीक्षा सुधार''** विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख प्रोफेसर अनिरुद्‌ध देशपांडे ने कहा कि परीक्षा व्यवस्था में छात्र, शिक्षक व समाज की विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए हमें प्रयत्नशील होना चाहिए। उन्होंने परीक्षा पद्धति में पारदर्शिता पर जोर देते हुए परीक्षा व्यवस्था में समग्रता लाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज विश्वविद्यालय मात्र परीक्षा कराने

वाले संस्थान बन कर रह गये हैं जबकि विश्वविद्यालयों को शिक्षण के साथ अनुसंधान पर जोर देना बहुत जरूरी है। मुख्य अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे. पी. सिंघल ने बताया कि परीक्षा की व्यवस्था वैश्विक रूप से स्वीकार्य हो एवं पारदर्शी हो, साथ ही परीक्षा व्यवस्था में मानवीय प्रयास कम हों एवं यांत्रिक प्रयास अधिक हों। प्रो. कैलाश सोडाणी ने कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में विस्तृत क्षेत्र में परीक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता पर लगातार चिंतन मनन चल रहा है और समय-समय पर सुधार हो भी रहे हैं जिनके परिणाम हमारे सामने हैं। संगोष्ठी में कुल तीन तकनीकी सत्र हुए। प्रथम सत्र में अध्यक्ष प्रो. के. सी. शर्मा एवं विषय विशेषज्ञ प्रो. अनुराग मिश्रा एवं प्रो. आशीष भटनागर रहे। यह तकनीकी सत्र ''च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम'' पर आधारित रहा। द्वितीय तकनीकी सत्र का विषय ''परीक्षा की श्रेष्ठ मूल्यांकन पद्धति'' था। इस सत्र की अध्यक्षता रुक्टा (रा.) के अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह ने की। मुख्य वक्ता शैक्षिक मंथन पत्रिका के सम्पादक प्रो. संतोष पाण्डेय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. हेमचन्द्र जैन रहे। तृतीय तकनीकी सत्र में कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी. के. दशोरा मुख्य वक्ता तथा महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की प्रो. ऋतु माथुर अध्यक्ष रहीं। इस सत्र में प्रतिभागियों ने ''परीक्षा में नवाचार एवं गुणात्मक सुधार'' पर चर्चा की।

संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के अध्यक्ष प्रो. बी. एल. चौधरी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अपनी व्यावहारिकता खो रही है। उन्होंने कहा कि उच्च उपाधि का मूल्यांकन स्तर भी उपाधि के अनुरूप होना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. कैलाश सोडाणी ने उच्च शिक्षा केन्द्रों को स्वायत्तता देने एवं रिक्त पदों को भरने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर ने संगठन की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान सत्र में महासंघ देश के विभिन्न कोनों में आठ संगोष्ठियाँ आयोजित कर रहा है। उन्होंने कहा कि शैक्षिक परिवार की परिकल्पना एवं शिक्षक को समाज में सम्मान दिलाना महासंघ का मुख्य ध्येय है। कार्यक्रम में संगोष्ठी निदेशक प्रो. बी. पी. सारस्वत ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ. अनिल दाधीच ने किया। आयोजन सचिव डॉ. एस. के. बिस्सु ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। देश भर से पधारे कुल 38 प्रतिभागियों ने पत्र वाचन किया एवं 113 प्रतिभागियों ने इस संगोष्ठी में हिस्सा लिया।

राजर्षि महाविद्यालय एवं राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय, **अलवर** की इकाईयों द्वारा संयुक्त रूप से ''**नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति**'' पर परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए रुक्टा (रा.) के पूर्व अध्यक्ष व महामंत्री तथा वर्तमान में सरगुजा विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ के प्रोफेसर मधुर मोहन रंगा ने केन्द्र व राज्य के विश्वविद्यालयों में असमान बजट वितरण को रेखांकित करते हुए कहा कि केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले मात्र 8 प्रतिशत विद्यार्थियों के लिए बजट का 75 प्रतिशत आवंटन अनुचित है। हमारी शिक्षा नीति सर्वे भवन्तु सुखिन: एवं समानता के आधार पर बननी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. पी. एम. शर्मा ने की। मंच संचालन डॉ. नीरज सैनी ने किया जबकि आभार डॉ. अजयकुमार वर्मा ने व्यक्त किया।

राजकीय महाविद्यालय, **कोटा** में स्थानीय इकाई के तत्वावधान में ''**राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं शिक्षक के दायित्व**'' विषय पर आयोजित परिचर्चा में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जगदीश प्रसाद सिंघल ने कहा कि आज की सबसे बड़ी जरूरत शिक्षा के सार्वभौमिक आधार को विकसित करने की है, भारतीय दृष्टिकोण के साथ शिक्षकों को सही परिवेश में काम करने का अवसर मिलना आवश्यक है। उन्होंने शिक्षकों को समाज का आचार्य बनने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी. के. दशोरा ने कहा कि शिक्षा तभी प्रभावी होती है जब उसे अद्यतन ज्ञान से जोड़ कर नई पीढ़ी तक पहुँचाया जाए। उन्होंने शिक्षकों को अपने प्रामाणिक जीवन के माध्यम से समाज का प्रबोधन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. एस. एन. गर्ग एवं डॉ. बी. एल. शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर 60 से अधिक शिक्षक उपस्थित रहे। आभार डॉ. विजय पंचोली ने व्यक्त किया तथा संचालन डॉ. गीताराम शर्मा ने किया।

2. **प्रदेश कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न** - संगठन की प्रदेश कार्यकारिणी बैठक दिनांक 19 नवम्बर 2016 को संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह की अध्यक्षता में देराश्री शिक्षक सदन जयपुर में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम महामंत्री ने गत बैठक का कार्यवाही विवरण प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके बाद गत बैठक के पश्चात् संगठन

की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का ब्यौरा महामंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया। साथ ही विभागशः आयोजित की गई शैक्षिक संगोष्ठियों की समीक्षा की गई। अलवर, जयपुर-प्रथम, अजमेर, उदयपुर, कोटा-बारां तथा जोधपुर-बाड़मेर-पाली विभागों की संगोष्ठियों में कुल 1468 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा कुल 163 शोध पत्रों का वाचन हुआ। बैठक में संगोष्ठियों के आयोजन पर संतोष व्यक्त किया गया तथा संगठन की अकादमिक प्रतिबद्धता के संकल्प के साथ इस प्रकार की गतिविधियाँ आगे भी जारी रखने पर सहमति व्यक्त की गई। बैठक के अगले चरण में 7 नवम्बर 2016 को जयपुर में पदनाम परिवर्तन को लेकर हुए प्रदर्शन की समीक्षा की गई। सदस्यों ने प्रदर्शन को अभूतपूर्व बताते हुए, प्रवास, समाचार पत्रों, महिलाओं की संख्या, नारे, सोशल मीडिया की भूमिका को रेखांकित किया। सदस्यों को जानकारी दी गई कि इस संबंध में प्रदर्शन के बाद सरकार की ओर से सकारात्मक संकेत मिले हैं। संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार के अत्यधिक दबाव के बावजूद संगठन ने शिक्षक हित को सर्वोपरि रखा है एवं प्रदर्शन पूर्व नियोजित स्थान व तिथि पर ही करने का संकल्प पूरा किया है। प्रदर्शन में 70 प्रतिशत से अधिक सदस्य संख्या का उपस्थित होना एक बड़ी उपलब्धि है, साथ ही संगठन पर जिम्मेदारी भी बढ़ी है। हमें भविष्य में संगठन के चित्र को अपने मन में रखते हुए अपना आकलन करना है। इसके बाद प्रदेश अधिवेशन हेतु स्थान पर चर्चा की गई। तिथि हेतु अध्यक्ष, महामंत्री को अधिकृत किया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि यदि पदनाम परिवर्तन की प्रक्रिया में सरकार सकारात्मक कार्यवाही नहीं करती है तो संघर्ष की अग्रिम रुपरेखा हेतु अध्यक्ष, महामंत्री अधिकृत होंगे। अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ. दिग्विजयसिंह ने वैचारिक अधिष्ठान के आलोक में संगठन कार्य बढ़ाने का आह्वान किया। बैठक के अंत में दिवंगत शिक्षक साथी एम.एस.जे. कॉलेज भरतपुर के पूर्व इकाई सचिव डॉ. अनिल सक्सेना को श्रद्धांजलि देते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रख कर प्रार्थना की गई। कल्याण मंत्र के साथ बैठक समाप्त हुई।

3. **अखिल भारतीय महिला कार्यकर्ता वर्ग सम्पन्न** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय महिला कार्यकर्ता वर्ग 17-18 दिसम्बर 2016 को वड़ोदरा (गुजरात) में सम्पन्न हुआ। वर्ग में शिक्षिकाओं की सद्य स्थिति, मूल्य शिक्षा में सहभाग, नवागत पीढ़ी में संस्कार व्यवस्था हेतु प्रयास, कार्य वृद्धि में महिला कार्यकर्ताओं की भूमिका आदि विषयों पर गहन चिंतन-प्रबोधन हुआ। रुक्टा (राष्ट्रीय) की ओर से वर्ग में सात महिला कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

समाज का प्रत्येक घटक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझें, उनका पालन करने के लिए सन्नद्ध हो तथा शिक्षक इस कर्तव्य पथ पर समाज का नेतृत्व करें, यह भाव जागरण करने वाला एक वैचारिक कार्यक्रम ***कर्तव्य बोध दिवस*** *हम प्रति वर्ष 12 जनवरी से 23 जनवरी के मध्य सम्पन्न करते आये हैं। इस वर्ष भी इकाईश: आयोजित कर्तव्य बोध कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय सहभागिता का अनुरोध है।*

जयपुर अधिवेशन में आप सबसे साक्षात् मिलने की कामना सहित।

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)

20, चित्रकूट कॉलोनी,
माकड़वाली रोड़, अजमेर-305004

अमृत वचन

"हमारा कर्म निर्णय करता है कि हमारा कितना अधिकार है और हम कितना आत्मसात् कर सकते हैं। स्वनिर्माण की शक्ति हमारे पास है। हम आज जो कुछ हैं यदि यह हमारे पिछले कर्मों का परिणाम है तो इससे निश्चित तर्क निकलता है कि जो हम भविष्य में बनना चाहते हैं, वह हमारे वर्तमान कर्मों का परिणाम होगा। अत: हमें विचार करना चाहिए कि हम कैसे कर्म करें।"

- 'स्वामी विवेकानंद'